International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 19-05-2024, Accepted: 10-06-2024, Published: 03-07-2024
Volume 10, Issue 4, 2024, Page No. 1-2

सॉची का महान स्तूपः एक अवलोकन

अचलाराम
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, राजकीय महाविद्यालय गिड़ा, बालोतरा, राजस्थान, भारत

सारांश
बौद्ध स्मारको के लिए प्रसिद्ध सांची का पर्यटन की दृष्टि से विशिष्ठ महत्व है। यहां स्थित स्पूत, मंदिर, स्तम्भ, विहार, चैत्यालय इस बात का प्रमाण है कि प्राचीनकाल में सांची बौद्ध धर्म के प्रचार एवं शिक्षा का प्रमूख केन्द्र था। शुरूआती बौद्ध कला की सवार्ते म निधियॉ सांची से ही प्राप्त होती है। मध्यप्रदेश के रायसेन जिले में स्थित सॉची भोपाल से लगभग 46 कि. मीतथा रायसेन से 23 कि.मी. और विदिशा से 10 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। सांची स्थित पहाड़ी को पुरातनकाल में बैदिशगिरी, चैतियागिरी, काकनाय इत्यादि नामा से पुकारा जाता था। सांची स्थित पहाड़ी के आसपास का परिदृश्य मन को लुभाता है। सदी के प्ररम्भिक अभिलेखो में सांची का नाम काकणाय, काकणादबोट, और सातवी सदी ईस्वी के अभिलेखों में वोटश्रीपर्वत उल्लेखित है। सांची में पुराने स्मारको के निर्माण का श्रेय मौर्य सम्राट अशोक को जाता है। यहां स्थित स्पूत, स्तम्भ, विहार, मंदिर, चेत्य, इत्यादि का निर्माण तीसरी सदी ईसा पूर्व से बाहरवी सदी ईस्वी तक निरन्तर जारी रहां।

मूलशब्दः उत्खनन, संग्रहालय, यूनेस्को, बौद्ध धर्म, स्मारक, बौधिसत्व

सम्राट अशोक के शासनकाल के दौरान निर्मित एक महत्वपूर्ण बौद्ध संरचना सांची का महान स्तूप है। माध्य भारत में स्थित सांची शहर में निर्मित सांची का महान स्पूत भारत के सबसे पुराने बौद्ध स्मारको में से एक है। कंलिग युद्ध के पश्चात अशोक ने कोई भी सैनिक अभियान नही चलाने की प्रतिज्ञा ली। पश्चातपस्वरूप सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया और बौद्ध धर्म के प्रचार में जटु गयें उन्होने धर्म प्रचारको की नियुक्तियॉ भी की और शिलालेख उत्कीर्ण करवाये। कहा जाता है कि समाट अशोक ने विदिशा निवासी साम्राज्ञी की इच्छानुसार ही सांची को बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार का केन्द्र बनायां उन्होने पहाड़ी पर एक स्तूत, विहार का निर्माण एवं एक एकाश्म, स्तम्भ स्थापित करवाया था। उनका मानना था कि बौद्ध धर्म की शिक्षा के लिए एकान्त स्थल जरूरी है। इस दृष्टि सांची उपयुक्त स्थान था। विश्व में बौद्ध धर्म का सबसे पहले प्रचार सांची से ही शुरू हुआ था। सम्राट अशोक के पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री सघंमित्रा सांची से ही बौद्धिवृक्ष की शाखा लेकर श्रीलंका गये थे। सांची के बौद्ध स्मारक यूनेस्को के द्वारा निर्मित विश्व धरोहर सूची में शामिल है। सांची के पुरात्व के क्षैत्र में काफी कार्य कर चुके सरअलेकजण्े डर कनिघम ने भी अपनी रिपोर्ट में सांची के स्पूतो का उल्लेख किया है। 14वी सदी ईस्वी से 18 ईस्वी तक सांची में स्मारको के विकास कार्य गति नही पकड़ सकां 1818 ई. जनरल टेलर पर इन बौद्ध स्मारको की फिर से खोज कीं इसके बाद 1822 ई.वी. में जनरल जोनसन तथा इसके बाद 1912 से 1919'में सरजोन मार्शल ने इन बौद्ध स्मारको का अन्वेषण, उत्तखनन और संरक्षण कार्य करवायां एक लघु संग्रहालय की स्थापना करवाईं वही संग्रहलय आज भारतीय पुरातत्व सवर्क्षण संग्रहालय के नाम से स्थित है।

सांची के महान स्तपू का चित्रण

सांची का महान स्तूप प्राचीन शिल्प कोशल और स्थापत्य कला की एक विशाल प्रति के रूप में खड़ा है। इसके विशाल अर्द्ध गोलाकार गुंबद का व्यास 36.5 मीटर और उचाई 164 मीटर है यह परिदृश्य पर हावी है तथा आगन्तुको अपने पवित्र आलिगन में खीचता है। स्तूप के चारो और एक वैदिका या बाड़ है। जो पवित्र स्थान को चित्रित करती है और इसे धर्म निरपेक्ष दुनिया से अलग करती है। महान स्तूप का गुंबद मेरू पर्वत का प्रतिनिधित्व करता है। यह ज्ञानोदय की बौद्ध अवधारणा और संसार की शाश्वात प्रकृति का प्रतिक है।

स्तूप के प्रवेश द्वारों पर विस्तृत नक्काशीदार तोरण या प्रवेश द्वार है वे बुद्ध के जीवन और विभिन्न जातक कथाओं के दृश्यो को दर्शाते है। ये जटिल नकासीदार मूर्तिया दृश्य कथाओ के रूप में काम करती है। जो आने वाले लोगों को बौद्ध धर्म की शिक्षाओं में तल्लीन होने के लिए आमन्त्रित करती है।

स्तूप के चारो और एक वैदिका है जो सजावटी रूपाकनो से सजी एक पत्थर की रेलिग है। यह स्थल की पवित्रता को और बढाता है। और घेरे का एहसास करता है।

सांची स्तूप का सांस्कृतिक महत्व

सांची के महान स्तूप ने प्राचीन भारत और उसके बाहर बौद्ध धर्म के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाईं यह बौद्ध तीर्थ यात्रा का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था। और प्रारम्भिक बौद्ध संघ के लिए एक सभा स्थल के रूप में कार्य करता था। यह स्तूप दुनियाभर से बौद्ध धर्म के अनुयायिओ को आकर्षित करता रहता है। यह एक शान्त और आध्यामिक रूप से उत्थानकारी अनुभव प्रदान करता है।

निष्कर्ष

सांची स्तूप भारत की प्राचीन बौद्ध विरासत का एक उल्लेखनिय प्रमाण है। इसका ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और स्थापत्य महत्व इसे देश के समृद्ध अतित का एक प्रिय प्रतिक बनाता है। ऐसे प्राचीन स्मारको को संरक्षित करता और उनकी सराहना करना हमारे इतिहास को समझने, हमारी संस्कृतिक जड़ो को मजबूम करने के लिए महत्वपूर्ण है। सांची स्तूप की भव्यता आगंतुको को इसकी भव्यता में तलीन होने तथा इससे निकलने वाली आध्यमिक आभा का अनुभव करने और इसके द्वारा दर्शाई गई स्थाई विरासत की सराहना करने के लिए आमन्त्रित करती है। इसे वर्ष 1989 में यूनस्को के द्वारा विश्व धरोवर स्थल के रूप में शामिल किया गया है।

सन्दर्भ सूची

1. सर जॉन मार्शल, द मॉन्यूमेट्स ऑफ सॉची 1940
2. सर जॉन मार्शल ए गाइड बुक टू सॉची 1955

3. ए कनिघम भिलसा टोप्स
4. देबाला मित्रा, सांची, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण 1968
5. जेम्स बर्गेस, द महान स्तूप, पर सांची कानीखेड़ा 1902
6. देबाला मित्रा, भारत के बौद्ध स्मारकं
7. सांची के पुरालेखिय चित्र, विक्टोरिया एवं अल्बर्ट संग्रहालय लंदन